साहित्योत्सव
Festival of Letters
24 - 29 फ़रवरी 2020

दैनिक समाचार बुलेटिन

मंगलवार, 25 फ़रवरी 2020

साहित्योत्सव 2020 का शुभारंभ

मन्नू भंडारी ने किया प्रदर्शनी का उद्घाटन

साहित्योत्सव 2020 का शुभारंभ आज अकादेमी की वर्ष 2019 की गतिविधियों की प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रख्यात लेखिका मन्नू भंडारी ने किया। उद्घाटन से पहले अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने उनका स्वागत पारंपरिक उत्तरीय और अकादेमी पुस्तकें भेंट करके किया। अपने स्वागत भाषण में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी द्वारा वर्ष 2019 की प्रमुख गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि अकादेमी ने पिछले वर्ष 715 कार्यक्रम आयोजित किए। साहित्य अकादेमी के इतिहास में कार्यक्रमों की यह सर्वाधिक संख्या है, यानी लगभग दो कार्यक्रम प्रतिदिन। इनमें से कुछ कार्यक्रम बेहद दुर्गम और सुदूर क्षेत्रों में भी किए गए जहाँ अभी तक किसी संस्था ने कोई साहित्यिक आयोजन नहीं किया था। इतना ही नहीं, अकादेमी ने 484 किताबें प्रकाशित कीं, जिनमें 239 नए प्रकाशन और 245 पुनःमुद्रित पुस्तकें हैं। उन्होंने विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि अकादेमी ने पिछले वर्ष चीन, मैक्सिको एवं फीजी के लेखकों को आमंत्रित किया। इसके अतिरिक्त अकादेमी ने अबूधाबी, शारजाह और ग्वारजरा अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेलों में भी भागीदारी की। उन्होंने इन सब के लिए लेखकों और साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि यह सब उनके सहयोग और प्रयासों से ही संभव हुआ है।

प्रदर्शनी उद्घाटन के क्रम में पारंपरिक दक्षिण भारतीय वाद्य यंत्रों के स्वरों के बीच दीप प्रज्वलन किया गया। मन्नू भंडारी के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव कौशिक, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव एवं विभिन्न भारतीय भाषा परामर्श मंडलों के संयोजक भी उपस्थित थे। दीप प्रज्वलन के पश्चात् अकादेमी के सचिव ने विशिष्ट अतिथियों को पूरी प्रदर्शनी का अवलोकन कराया।

आज के कार्यक्रम

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन
साहित्य अकादेमी सभाकक्ष, तृतीय तल, पूर्वाह्न 10.00 बजे

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन (जारी)
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.00 बजे

पुरस्कार विजेताओं से मीडिया की बातचीत
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 11.00 बजे

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 अर्पण
कमानी सभागार, सायं 5.30 बजे

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन का पहला दिन

वाचिक साहित्य पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाना ज़रूरी-अन्विता अब्बी

अपराह्न 2.30 बजे तीन दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी सम्मिलन का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य प्रतिष्ठित भाषाविज्ञानी एवं विदुषी अन्विता अब्बी ने दिया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने उत्तरीय और पुस्तकें भेंट कर उनका स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने भाषा को मस्तिष्क का दर्पण मानते हुए कहा कि आदिवासी भाषाओं में लोकज्ञान की अमूल्य थाती है, जिसमें हमारा अतीत छुपा हुआ है। आदिवासी साहित्य में पारंपरिक ज्ञान के ख़ज़ाने भरे हैं। हमें उनके इस ज्ञान को संरक्षित करना है और उसे लंबे समय तक जिंदा रखना है। उन्होंने आदिवासी साहित्य को बचाने की कोशिश में लगे साहित्य अकादेमी के प्रयासों की भी चर्चा की। अपने उद्घाटन वक्तव्य में अन्विता अब्बी ने कहा कि आदिवासी वाचिक साहित्य, लोक साहित्य की परंपरा की ही कड़ी है, जिसमें हमारा दैनिक जनजीवन नदी की धारा की भाँति प्रवाहित होता है। हमें सामाजिकता एवं समावेशिता को साथ-साथ लेकर चलना चाहिए। वाचिक साहित्य को कभी मरने नहीं देना चाहिए। इसे स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए। निरंतर बदलाव ही

वाचिक साहित्य की विशेषता है। इस साहित्य को किसी प्रकाशक की ज़रूरत नहीं। यह स्वयं में इतना सशक्त है कि एक लंबे समय तक अपनी पहचान बनाए रख सकता है। उन्होंने लेखक और पाठकों तथा वाचिक साहित्य के बीच निरंतर बढ़ती दूरी पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे हमारा आदिवासी साहित्य धीरे-धीरे लुप्त हो जाएगा। उन्होंने पर्यावरण और भाषा दोनों को ही बचाने की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए कहा कि आदिवासी हमारे देश के पहले नागरिक हैं और इनकी सुरक्षा करना हमारा कर्तव्य है। संताली भाषा का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि यह पूरी तरह वैज्ञानिक लिपि है।

सम्मिलन का पहला सत्र कविता-पाठ का था, जिसमें प्रख्यात कवि चंद्रकांत मुरासिंह की अध्यक्षता में च. सोते आईमोल (आईमोल), मुक्तेश्वर केंपराई (दिमासा), मिर्थनार्क के. मरक (गारो), रूप लाल लिंबू (लिंबू) एवं न्गुरांग रीना (ञिशी) ने सर्वप्रथम अपनी मूल आदिवासी भाषा में एक कविता तथा अन्य कविताएँ हिंदी या अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 घोषित

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में रवींद्र भवन, नई दिल्ली में सोमवार, 24 फ़रवरी 2020 को आयोजित अकादेमी के कार्यकारी मंडल की बैठक में 23 पुस्तकों को साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 के लिए अनुमोदित किया गया। कन्नड भाषा का पुरस्कार बाद में घोषित किया जाएगा। पुस्तकों का चयन नियमानुसार गठित संबंधित भाषाओं की त्रिसदस्यीय निर्णायक समितियों की संस्तुतियों के आधार पर किया गया। पुरस्कार, पुरस्कार वर्ष के तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के पहले के पाँच वर्षों (1 जनवरी 2013 से 31 दिसंबर 2017) के दौरान प्रथम प्रकाशित अनुवादों को प्रदान किए गए हैं। पुरस्कार के रूप में 50,000/- रुपए की राशि और उत्कीर्ण ताम्रफलक इन पुस्तकों के अनुवादकों को इसी वर्ष आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान किए जाएँगे।

भाषा	अनुवाद का शीर्षक	अनुवादक	मूल पुस्तक, विधा, भाषा एवं लेखक का नाम
असमिया	राजतरंगिणी	नवकुमार हंदिकै	राजतरंगिणी (ऐतिहासिक इतिवृत्त), संस्कृत, कल्हण
बाङ्ला	भारतवर्ष	तपन बंद्योपाध्याय	संग्रह (कविता), ओड़िआ, सीताकांत महापात्र
बोडो	अबंलावरिनि फाव	गोपीनाथ ब्रह्म	दैवत्तिंटे विकृतिकळ (उपन्यास), मलयाळम् एम. मुकुंदन
डोगरी	सतीसरै दी क्हानी	रत्न लाल बसोत्रा	कथा सतीसर (उपन्यास), हिंदी, चंद्रकांता
अंग्रेज़ी	कुसुमाबले	सुसैन डैनियल	कुसुमाबले (उपन्यास), कन्नड, देवनूर महादेव
गुजराती	अंतर्नाद	बकुला घासवाला	द वॉइस ऑफ़ द हर्ट (आत्मकथा) अंग्रेज़ी, मृणालिनी साराभाई
हिंदी	सरस्वतीचंद्र (खंड 1और4) (भाग-1और2)	आलोक गुप्त	सरस्वतीचंद्र (उपन्यास), गुजराती, गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी
कश्मीरी	गोरा	रतन लाल जौहर	गोरा (उपन्यास), बाङ्ला/उर्दू, रवींद्रनाथ ठाकुर
कोंकणी	जिंदगीनामा-जिवो रुख	जयंती नायक	ज़िंदगीनामा (उपन्यास), हिंदी, कृष्णा सोबती
मैथिली	अकाल मे सारस	केदार कानन	अकाल में सारस (कविता संग्रह), हिंदी, केदारनाथ सिंह
मलयाळम्	श्रीरामचरितमानसम(तुलसीदासरामायनम)	सी. जी. राजगोपाल	श्री रामचरितमानस (कविता), हिंदी, तुलसीदास
मणिपुरी	लालहौबा अमसुङ अतै शैरेङशिङ	ख. प्रकाश सिंह	विद्रोही ओ अन्यान्य कविता (कविता), बाङ्ला, क़ाज़ी नजरुल इस्लाम
मराठी	आणि मग एक दिवस...	सई परांजपे	एंड देन वन डे (आत्मकथा), हिंदी, नसीरुद्दीन शाह
नेपाली	बोज्यूले भनेको कथा	सचेन राई 'दुमी'	ग्रेंडमदर्स टेल (उपन्यास), अंग्रेज़ी, आर.के. नारायण
ओड़िआ	श्रेष्ठ हिंदी गल्प	अजय कुमार पटनायक	चयनित (कहानी-संग्रह), हिंदी, विभिन्न लेखक
पंजाबी	देश वंद दे लहू दे रंग	प्रेम प्रकाश	चयनित (कहानी), उर्दू, सआदत हसन मंटो
राजस्थानी	चारु वसंता	देव कोठारी	चारु वसंता (कविता), कन्नड, नाडोज ह.प. नागराजय्या
संस्कृत	रश्मिरथी	प्रेमशंकर शर्मा	रश्मिरथी (कविता), हिंदी, रामधारी सिंह दिनकर
संताली	आईकाउ	खेरवाल सोरेन	अनुभव (उपन्यास), बाङ्ला, दिव्येंदु पालित
सिंधी	मीठो पानी खारो पानी	ढोलन राही	मीठा पानी खारा पानी (उपन्यास), हिंदी, जया जादवानी
तमिऴ	निलम पूत्तु मलर्द नाल	के.वी. जयश्री	निलम पूत्तु मलर्न्न नाल (उपन्यास), मळयालम्, मनोज कुरूर
तेलुगु	ओका हिजड़ा आत्मकथा	पी. सत्यवती	द ट्रुथ अबाउट मीः ए हिजड़ा लाइफ़ स्टोरी(आत्मकथा), अंग्रेज़ी, ए. रेवती
उर्दू	मोर पंख	असलम मिर्ज़ा	मीच माझा मोर (कविता), मराठी, प्रशांत असनारे

अकादेमी पुस्तकालय की पूर्वज पुस्तकें

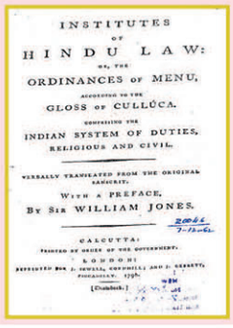
INSTITUTES
OF
HINDU LAW:
OR, THE
ORDINANCES OF MENU,
ACCORDING TO THE
GLOSS OF CULLUCA.
COMPRISING THE
INDIAN SYSTEM OF DUTIES,
RELIGIOUS AND CIVIL.
VERBALLY TRANSLATED FROM THE ORIGINAL
SANSCRIT.
WITH A PREFACE,
By Sir WILLIAM JONES.
CALCUTTA:
LONDON:

इस साहित्योत्सव में अकादेमी के दिल्ली स्थित पुस्तकालय में संगृहीत प्राचीन दुर्लभ पुस्तकों की एक विशेष प्रदर्शनी भी आयोजित की गई है। इस प्रदर्शनी में 1796 में छपी और अकादेमी के पुस्तकालय में उपलब्ध सबसे प्राचीन पुस्तक भी दर्शनार्थ रखी गई है। यह महर्षि मनु की रचना की सर विलियम जोंस द्वारा अंग्रेज़ी में अनूदित कृति "Institues of Hindu Law : or the Ordinances of Manu" है।

पारंपरिक लोकसांगीतिक नाटक "श्रीकृष्ण पारिजात" की प्रस्तुति

श्रीकृष्ण पारिजात को मूल रूप से अपर्ला तम्मान्नअप्पा और शिरगुप्पी सदाविवप्पा द्वारा कविता के रूप में लिखा गया था। उन्होंने तेलुगु 'भमाकलापम' को देखा और जयदेव के 'गीतगोविंद' को पढ़ा, तथा बहुत गहरे प्रभावित हुए थे। अंततः श्रीकृष्ण, रुक्मिणी और सत्यभामा की पारंपरिक कथा पर आधारित इस महाकाव्य को सम्मिलित रूप से लिखा था। बाद में, एक अन्य लेखक कुलगाम तम्मान्नअप्पा ने भी संवादों की रचना की और इसे एक संपूर्ण नाटक बना दिया। (मूल रूप से इस नाटक के केवल पाँच एपिसोड थे। अब इसके दस एपिसोड हैं।) तब से इस मूल कथानक को कई कलाकारों द्वारा संशोधित किया जाता रहा है। कहा जाता है कि कुछ मंडलियाँ तो तीन से चार रातों से भी अधिक समय तक इस नाटक को करती हैं।

श्रीकृष्ण पारिजात, श्रीकृष्ण, रुक्मिणी और सत्यभामा के संबंधों के इर्द-गिर्द घूमता है, जो मुख्य रूप से अपने आध्यात्मिक आयामों और शास्त्रीय संगीत के लिए जाना जाता है। श्रीबसवेश्वर श्रीकृष्णं पारिजात संघ तनिकेरी, ता. मुधोळ, जनपद बागलाकोट, कर्नाटक की मंडली ने विभिन्न रागों में सांगीतिक लोक नाटक के चुनिंदा दृश्य प्रस्तुत किए। दुर्गव्वा मुधोळ (रुक्मिणी के रूप में) के साथ भाग लेने वाले कलाकार, पार्वती कल्गेरी (श्रीकृष्ण के रूप में), यल्लम्मा मदारा (सत्यभामा के रूप में), और हारमोनियम पर अशोक बेल्लाक्की थे। साथ ही, तबले पर महंतेशा सुतार, भागवत और ताल पर महादेव यारानलास, मारीभागवत और ताल पर माल्लप्पा दद्देनवारा, और ताल पर समूह प्रबंधक शिवानंद सेल्लिकेरी सम्मिलित थे। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

साहित्योत्सव 2020 के कार्यक्रम

दिनांक	समय	कार्यक्रम	स्थान
26 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	लेखक सम्मिलन (पुरस्कृत लेखक अपने सृजनात्मक अनुभव साझा करेंगे)	रवींद्र भवन परिसर
26 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन (जारी...)	रवींद्र भवन परिसर
26 फ़रवरी 2020	अपराह्न 2.30 बजे	नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
26 फ़रवरी 2020	सायं 6.00 बजे	संवत्सर व्याख्यान (प्रख्यात विचारक एवं भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा)	रवींद्र भवन परिसर
27 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आमने–सामने : कुछ पुरस्कृत लेखकों के साथ संवाद	रवींद्र भवन परिसर
27 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी)	साहित्य अकादेमी समागार
27 फ़रवरी 2020	अपराह्न 2.00 बजे	अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन	रवींद्र भवन परिसर
27 फ़रवरी 2020	सायं 6.00 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम : भारतीय वाद्य यंत्रों की समेकित प्रस्तुति	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) (जारी)	साहित्य अकादेमी समागार
28 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	अपराह्न 2.30 बजे	मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	सायं 6.00 बजे	महमूद फ़ारूक़ी द्वारा दास्तानगोई	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) (जारी)	साहित्य अकादेमी समागार
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	भारत में प्रकाशन की स्थिति (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	नई फ़सल (अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन)	रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in